Ankara Üniversitesi
Dil ve Tarih-Coğrafya Fakültesi
Doğu Dilleri Dergisi / Journal of Oriental Languages

Cilt/Volume: VI Sayı/Number: 1 Haziran/June 2021

HİNDĪ DİLİNİN YABANCI DİL OLARAK ÖĞRETİMİ

Ozan Cem AYDIN*
Esra KÖKDEMİR**

Öz

Günümüzde dil bakımından çeşitlik gösteren en zengin ülke Hindistan Cumhuriyeti resmi adıyla bilinen Hindistan'dır. Dünyanın ikinci büyük nüfusuna ve yedinci büyük kıtasına sahip olmasıyla da bu çeşitlilik farklı dillerin ve farklı lehçelerin ortaya çıkmasında önemli rol oynamıştır. Diğer yandan, bağımsızlığını ilan edene kadar farklı etnik gruplar tarafından yönetilmesiyle de bir takım kültürel etkileşimleri berberinde getirmiştir. Bu etkileşimlerin en başında 14 Eylül 1949 yılında çıkan yasa ile ülkenin resmi dili olarak kabul edilen Hindī Dili yer almaktadır. MÖ 1500'lerde Ari ırkının bu coğrafyaya gelmesiyle başlayan tarihi kronolojik olarak, Magadha İmparatorluğu'nun yükselişi ile birlikte Mahacānapadalar Dönemi, Akhemenid Dönemi, Makedon Kral III. Alexandros'un Seferleri doğrultusunda şekillenen dönem, Maurya İmparatorluğu dönemi, Gupta Dönemi, Harsha Dönemi, Kuzey ve Güney Krallıklar Dönemi, Türk-Moğol İmparatorlukları Dönemi, Arapların, Gazneli Mahmut'un ve Babür Devleti'nin İstila Dönemleri, Portekiz'in hakimiyet dönemi ve son olarak İngiltere'nin hâkimiyet dönemi vasıtasıyla, Hindistan'ın resmi tarihi şekillenmiştir. Şekillenen bu tarihinde sosyo-kültürel etkileşimin bir örneği olarak Hindī Diline Arapça, Farsça ve İngilizce kökenli sözcüklerin geçtiği bilinmektedir. Kalem, hava, insan, doktor, şayet, lakin gibi sözcükler bunlardan bazılarıdır ve bu tür sözcükler Hindī dilinde önemli ölçüde yer almaktadır. Bu açıdan yabancı dil olarak Hindī dili öğrenimi kolay gibi görünse de aslında sadece Türkçe ve Hindī dilinde ortak kelimelerin kullanımı söz konusudur. Diğer yandan Hindī dil bilgisi kuralları Türkçeden tamamen farklı olup, ilgili dil öğreniminde birtakım zorluklarla karşılandığı tespit edilmiştir. Bu çalışmada ise, bu zorlukların giderilmesine yönelik yabancı dil olarak Hindī dilinin nasıl öğrenileceği ve öğrenilirken nelere dikkat edilmesi gerektiği incelenecektir. Bu sorunsal çerçevesinde, yakın gibi görünen Türkçe ve Hindī dili arasındaki farklar da ortaya konmaya çalışılacaktır.

Anahtar Kelimeler

Hindistan
Hint Dilleri
Hindi Dili
Hindi Dil Bilgisi

Makale Hakkında

Araştırma Makalesi

Gönderim Tarihi:
02.05.2021
Kabul Tarihi:
06.06.2021
E-Yayın Tarihi:
25.06.2021

TEACHING HINDI AS A FOREIGN LANGUAGE

Abstract

In these days, the most different languages in India, which also has been known by the name of Republic of India. With this variety, India is the second largest population and seventh largest in the world in the origin of many languages and dialects. Apart from this, there is also the mutual effect of the gathering of many kinds of people under the rule till independence is achieved. On 14 September 1949, Hindi has been the official language of India under a rule. If seen in chronological order, a series started in 1500 BC with the arrival of the Aryans. The history of India took shape with after the rise of Magadha dynasty, Mahajanapada,

Keywords

India
Indian Language
Hindi Language
Hindi Grammar

Article Info

* Ankara Üniversitesi, Dil ve Tarih-Coğrafya Fakültesi, Doğu Dilleri ve Edebiyatları Bölümü, Hindoloji Anabilim Dalı. ozanaydinc@gmail.com.

** Dr. Öğr. Üyesi, Ankara Üniversitesi, Dil ve Tarih-Coğrafya Fakültesi, Doğu Dilleri ve Edebiyatları Bölümü, Hindoloji Anabilim Dalı. ekokdemir@ankara.edu.tr. ORCID: 0000-0002-3339-0071

Achaemenid kingdom, Alexander, Maurya dynasty, Gupta dynasty, Harsha dynasty, North and South dynasty, Turk-Mughal dynasty, Arab dynasty, Mahmud Ghaznavi, Mughal empire, Portugal and last under British rule. In this connection, the effects of languages like Arabic, Persian, English etc. have mutually fallen into Hindi. Words like pen, wind, human, doctor, maybe, but these are just a few. You will find such words comfortably in Hindi language. Common words are more in Turkish and Hindi but there is also a difference in grammar and pronunciation. Due to this difference, the difficulty of learning Hindi has been determined by language scientists. In this article, along with the special methodology of learning Hindi, ways to reduce this difficulty are also described. Generalities and differences in Turkish and Hindi languages have also been introduced.

Research Article

Received: 02.05.2021
Accepted: 06.06.2021
Online Published: 25.06.2021

विदेशी भाषा के तौर पर हिंदी की शिक्षा

Ozan Cem AYDIN*
Esra KÖKDEMİR**

सारांश

इन दिनों में भाषा से संबंधित सबसे अधिक विभिन्नता इंडिया में है जो कि भारत गणराज्य नाम से भी जाना जाता है. इस विभिन्नता के साथ कई भाषाओं और बोलियों की उत्पत्ति में भारत की विश्व में सबसे अधिक दूसरी जनसँख्या और सातवां सबसे बड़ा उपमहाद्वीप होने का प्रभाव है. इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता प्राप्त करने तक कई क़िस्म के लोगों के शासन में इकट्ठे रहने का भी पारस्परिक असर है. *14* सितम्बर *1949* में एक नियम के तहत हिंदी भाषा भारत की राजभाषा बनी. कालानुक्रमिक क्रम में देखा जाए तो ईसापूर्व *1500* में आर्य लोगों के आने के साथ एक सिलसिला आरंभ हुआ. तत्पश्चात मगध राजवंश के बढ़ने के बाद महाजनपद, हख़ामनी साम्राज्य, सिकंदर, मौर्य राजवंश, गुप्त राजवंश, हर्षवर्धन, उत्तर एवं दक्षिण राजवंश, तुर्क-मंगोल राजवंश, अरब राजवंश, महमूद ग़ज़नवी, मुग़ल साम्राज्य, पुर्तगाल और अंतिम में ब्रिटिश राज के शासन में भारत के इतिहास ने आकार ले लिया. इस सिलसिले में अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि भाषाओं के असर पारस्परिक रूप से हिंदी में पड़ गए हैं. कलम, हवा, इंसान, डॉक्टर, शायद, लेकिन जैसे शब्द इनमें से कुछ ही हैं. हिंदी भाषा में इस तरह के शब्द आपको आराम से मिल जाएँगे. तुर्की तथा हिंदी में सामान्य शब्द अधिक है मगर व्याकरण और उच्चारण में अंतर भी बहुत है. इस अंतर के कारण हिंदी सीखने की कठिनाई भाषा-वैज्ञानिकों के द्वारा निर्धारित की गयी है. इस लेख में हिंदी सीखने के विशेष प्रद्धति के साथ इस कठिनाई को घटाने के तौर तरीके भी बताए गए हैं. तुर्की तथा हिंदी भाषा में सामान्यता एवं अंतर भी प्रस्तुत किए गए हैं.

Anahtar Kelimeler

भारत,
भारतीय भाषाएँ,
हिंदी,
हिंदी व्याकरण

Makale Hakkında

Araştırma Makalesi

Gönderim Tarihi: 02.05.2021
Kabul Tarihi: 06.06.2021
E-Yayın Tarihi: 25.06.2021

प्रस्तावना

भारत की आधिकारिक भाषा हिंदी बोलने वालों की संख्या लगभग 50 करोड़ है. केवल भारत में नहीं, बल्कि न्यूज़ीलैण्ड, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, इंग्लैंड, नेपाल, फिजी, दक्षिण अफ़्रीका तथा संयुक्त अरब अमीरात आदि मुल्कों में भी रहने वाले भारतीयों के द्वारा हिंदी बोली जाती है. "हिंदी" शब्द का मूल रूप फ़ारसी है, मगर असल में "हिंदी, हिन्दू" शब्द "सिंधु" शब्द से बने हैं जिनका मूल रूप संस्कृत है. सिंधु शब्द सिंधु नदी का वर्णन करता है. 2015 में प्रकाशित हुई ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में "हिंदी" शब्द के दो अर्थ हैं; १. (स्त्रीलिंग संज्ञा) हिंदी भाषा. २. (विशेषण) हिंदी से संबंधित साहित्य या भाषा. इसलिए तुर्की भाषा में हिंदी का नामकरण "Hintçe" (अंग्रेजी:

*अंकारा विश्वविद्यालय, भाषा व इतिहास-भूगोल संकाय, पूर्वी भाषाएँ एवं साहित्य विभाग, इंडोलोग्य (भारतीविद्या) विभाग ozanaydinc@gmail.com.
**अंकारा विश्वविद्यालय, भाषा व इतिहास-भूगोल संकाय, पूर्वी भाषाएँ एवं साहित्य विभाग, इंडोलोग्य (भारतीविद्या) विभाग ekokdemir@ankara.edu.tr.

Indian) नहीं होना चाहिए. "Hintçe" शब्द विशेष रूप से "हिंदी" को परिभाषित नहीं करता, "Hintçe" का अर्थ "भारतीयों की भाषा" होता है. भारत में असम, ओडिशा, पंजाब, गुजरात, राजस्थान एवं महाराष्ट्र जैसे कई राज्य हैं. तेलंगाना के साथ 29 राज्य हैं. हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे कुछ क्षेत्र में हिंदी बोली जाने के बावजूद भी कुछ राज्यों में गुजराती, पंजाबी, बांग्ला, उर्दू जैसी अनेक भाषाएँ भी बोली जाती हैं. इस बहुभाषाई के कारण कुल मिलाकर 22 भाषाएँ आधिकारिक मानी जाती हैं. यानी कि हर भारतीय निवासी की मातृ भाषा हिंदी नहीं है. कुछ ऐसे भी भारतीय हैं जिन्हें हिंदी बिलकुल नहीं आती. भारत में हिंदी के अलावा कई भाषाएँ आधिकारिक मानी जाती है. "Hintçe" शब्द तमाम भारतीय भाषाओं का वर्णन करता है, केवल हिंदी का नहीं. 14 सितम्बर 1949 में एक नए कानून के तहत हिंदी राजभाषा बनी. हर वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है (कोकडेमिर, २०२०: ९; कोकडेमिर, २०२१: ६).

इंडिया ने तुर्क-मंगोल, अरबी, महमूद ग़ज़नवी, मुग़ल साम्राज्य जैसे विभिन्न समाजों और साम्राज्यों की मेज़बानी की है .पुर्तगाल एवं ब्रिटिश राज के शासन में कुछ धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव हो गए हैं. इन प्रभावों में से एक तो अरबी, फ़ारसी, तुर्की एवं अंग्रेजी शब्दों का हिंदी में प्रयोग किया जाना आरम्भ हो गया है. यद्यपि हिंदी तथा तुर्की में अधिक सामान्य शब्द और सामान्यता है, इस लेख का एक और उद्देश्य तुर्की और हिंदी का अंतर भी प्रदर्शन करना है. अंतर दिखाने के लिए दोनों भाषाओं के विभाजक मुद्दे प्रस्तुत किए गए हैं.

विदेशी भाषा के तौर पर हिंदी व्याकरण

हिंदी भाषा इतिहास में कभी खतरे में नहीं रही, अपना व्याकरण, भाषी-संरचना, ध्वन्यात्मकता (फ़ोनेटिक) बिना खोए आज तक आयी है. हिंदी के ध्वन्यात्मकता ने अपनी लिपि यानी देवनागरी से संबंधित क्रमशः रूप ले लिया है. हिंदी के संरचना के अनुसार अनेक सूफिक्सेस हैं. बिना सूफिक्स लगे शब्द "धातु" (अंग्रेजी: Root तुर्की: Kök) कहलाता है. एक शब्द से कई सूफिक्सेस जोड़कर कई नए शब्द एवं अर्थ बनाए जा सकते हैं. धातु के चार अलग प्रमुख समूह माने जाते हैं; (१-संज्ञा, २-क्रिया, ३-सर्वनाम, ४-विशेषण). सामान्यतः क्रिया की धातु एक ही शब्द से बनते हैं (देख-, लिख-, बैठ- आदि). इसके अतिरिक्त हिंदी में संज्ञाओं में लिंग की बात भी आ जाती है. लिंग के अनुसार विशेषण एवं क्रियाविशेषण भी बदलते हैं. यानी कि केवल संज्ञा नहीं बल्कि विशेषण और क्रियाविशेषण से भी कई सूफिक्सेस लगाए जा सकते हैं. संज्ञाओं के साथ विशेषण और क्रियाविशेषण भी "धातु" रूप में आपको मिलेंगे. यही हिंदी तथा तुर्की भाषा में अंतर दिखाई देता है. हिंदी भाषा में किसी भी शब्द से सूफिक्सेस लगाकर लिंग या वचन को लेकर बदलाव किया जा सकता है, अलग मतलब निकाला जा सकता है. इस तरह सफ़िक्स को अंग्रेजी में "Derivational Affix" कहते हैं. इनके उदाहरण; "-वाला, वाले, -वाली, -ना, -ने , -कर" आदि हैं. इन सूफिक्सेस का प्रयोग करके संज्ञा से नया संज्ञा, संज्ञा से क्रिया और क्रिया से संज्ञा बना सकते हैं. इसके अतिरिक्त "-ए, -इ+याँ, -एँ" जैसे संज्ञाओं से लगने वाले सूफिक्सेस भी हैं. इन्हें अंग्रेजी में "पोस्सेस्सिवे, केस, इंतेर्रोगत्वे सूफिक्सेस" और हिंदी में "संबंध कारक, तद्धित प्रत्यय, प्रश्नवाचक सर्वनाम" कहते हैं. क्रिया से लगने वाले सूफिक्सेस की बात करें तो; "-हूँ, -है, -हो, -हैं, -रहा, -रहे, -रही, - ऊँगा, -ऊँगी, -एगा, -एगी, -एँगे, -एँगी, -ओगे, -ओगी" आदि

सूफिक्सेस शब्द की धातु से लग सकते हैं. ये सूफिक्सेस लिंग, काल और वचन के अनुसार शब्द से लगते हैं. हिंदी भाषा में कुछ कालों में ये सूफिक्सेस और बाकी भाषी तत्व एक दूसरे से मिश्रित करके भी प्रयोग किये जाते हैं (कुमार, २००८). उदाहरण: "रहा हूँ".

शब्दों के छः प्रकार माने जाते हैं; १-संज्ञा, २-विशेषण, ३-सर्वनाम-कारक, ४-क्रियाविशेषण, ५-क्रिया, ६-सम्बन्धबोधक. संज्ञाओं के लिंग के तहत दो प्रकार (पुल्लिंग-स्त्रीलिंग) होते हैं, विशेषणों के विशेषता एवं वचन के तहत कुछ प्रकार होते हैं. इनके अतिरिक्त सर्वनाम के भी प्रकार पढ़ें;

१-पुरुषवाचक सर्वनाम (मैं, तू, वह)

२-निजवाचक सर्वनाम (अपना, अपने, अपनी)

३- निश्च्यवाचक सर्वनाम (यह, वह)

४-प्रश्नवाचक सर्वनाम (क्यों, क्या, कब)

५-अनिश्चयवाचक सर्वनाम (कुछ, कोई)

६- संबंध कारक (का, के, की) (जयनारायण, १९९०; अशोक, १९९५)

जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं. क्रियाविशेषण के भेद;

१-सर्वनाम से यौगिक क्रियाविशेषण (यहाँ, वहाँ, कहाँ)

२-कालवाचक क्रियाविशेषण (शाम, आज, रात)

३-रीतिवाचक क्रियाविशेषण (जल्दी से, आराम से, धीरे-धीरे)

४-परिमाणवाचक क्रियाविशेषण (बहुत, बिलकुल, छोटा-सा) (जयरामन, २०१०)

क्रिया की बात करें तो क्रिया कर्ता के लिंग, वचन और वाक्य के काल के अनुसार बदलते हैं. भूतकाल में क्रिया के दो प्रकार हैं, जिन्हें सकर्मक-अकर्मक क्रिया कहते हैं. क्रिया के संरचना के अनुसार दो तरह के क्रिया होते हैं जिन्हें सरल और यौगिक क्रिया कहते हैं. जैसे; "देखना, बोलना (सरल)", "मर जाना, समझा देना (यौगिक)". शब्दों का एक और प्रचार तो संबंधबोधक है. संबंधबोधक के भी क्रिया की तरह सरल एवं यौगिक के तौर पर दो प्रकार होते हैं. जैसे; "में, पर, से (सरल), "के लिए, की तरफ़, के बाहर, के कारण (यौगिक). संबंधबोधक के हिंदी व्याकरण में १२ भेद होते हैं. संबंधबोधक हमेशा किसी शब्द से जुड़ा होता है. अकेला प्रयोग नहीं किया जाता. हिन्द-यूरोपीय भाषा-परिवार में आने के बावजूद हिंदी की वाक्य रचना यूरोपीय भाषाओं के तुलनीय अलग रहती है. वाक्य का

अर्थ, किसी संज्ञाओं या क्रियाओं का प्रयोग करके सार्थक समूह बनाना होता है जिससे भाव स्पष्ट हो. इस समूह में जितने भी संज्ञा, क्रिया, कर्ता, संबंधबोधक, विशेषण आदि हैं इन्हें वाक्य के तत्व कहते हैं. इन्हीं से वाक्य बनता है. हिंदी में जिस क्रम से वाक्य बनता है, तुर्की भाषा में भी उसी क्रम से बनता है (गुप्ता, २०१२).

HINDĪ	**TRANSLİTERASYON**	**TÜRKÇE**
अंग्रेज़ (İng.)	*angrez*	İngiliz
अगर (Far.)[1]	*agar*	eğer
अजनबी (Ar.)	*acnabī*	ecnebi
अमीर (Ar.)	*amīr*	amir
अस्पताल (İng.)	*aspatāl*	hastane
आज़ाद (Far.)	*āzād*	azat
आवाज़ (Far.)	*āvāz*	avaz
आसमान (Far.)	*āsmān*	asuman
इंतज़ार (Ar.)	*intazār*	intizar
इजाज़त (Far./Ar.)	*icāzat*	icazet
इबादत (Far./Ar.)	*ibādat*	ibadet
इम्तहान (Ar.)	*imtahān*	imtihan
इरादा (Ar.)	*irādā*	irade
इलाज (Ar.)	*ilāc*	ilaç
इशारा (Ar.)	*işārā*	işaret
उस्ताद (Far.)	*ustād*	üstat
औरत (Far./Ar.)	*aurat*	kadın
कंप्यूटर (İng.)	*kampyutar*	bilgisayar
कलम (Ar.)	*kalam*	kalem
क़सूर (Ar.)	*kasūr*	kusur

[1] ऑक्सफोर्ड डक्शनरी (२०१५), इस सूची में शब्दों की जड़ में जानकारी के लए इस्तेमाल कया गया है.

काग़ज़ (Far.)	*kāgaz*	kağıt
काफ़ी (Ar.)	*kāfī*	kâfi
कार (İng.)	*kār*	araba
कताब (Ar.)	*kitāb*	kitap
कनारा (Far.)	*kinārā*	kenar
कॉलेज (İng.)	*kolec*	kolej
ग़रीब (Ar.)	*garīb*	garip
गर्दन (Far.)	*gardan*	gerdan
चाय (Far.)	*çāy*	çay
चूँ क (Far.)	*çūnki*	çünkü
चेहरा (Far.)	*çehrā*	çehre
ज़मीन (Far.)	*zamīn*	zemin
ज़रूर (Ar.)	*zarūr*	zaruri
जवाब (Ar.)	*cavāb*	cevap
जान (Far.)	*cān*	can
जानवर (Far.)	*cānvar*	canavar
ज़िंदा	*zindā*	zinde
ज़्यादा (Ar.)	*zyādā*	ziyade
डॉक्टर (İng.)	*doktar*	doktor
तबियत (Far./Ar.)	*tabiyat*	tabiat
तरफ़ (Ar.)	*taraf*	taraf
तशरीफ़ (Ar.)	*taşrīf*	teşrif
तस्वीर (Ar.)	*tasvīr*	tasvir
तूफान (Ar.)	*tūfān*	tufan

दफ़्तर (Ar.)	*daftar*	ofis, yazıhane
दरज़ी (Far.)	*darzī*	terzi
दावत (Far./Ar.)	*dāvat*	davet
दावा (Ar.)	*dāvā*	dava
दिक़्क़त (Far./Ar.)	*dikkat*	dikkat
दिमाग़ (Ar.)	*dimāg*	dimağ
दुकान (Far./Ar.)	*dukān*	dükkan
दुश्मन (Far.)	*duşman*	düşman
दूरबीन (Far.)	*dūrbīn*	dürbün
दोस्त (Far.)	*dost*	dost
नज़र (Ar.)	*nazar*	nazar
नफ़रत (Far./Ar.)	*nafrat*	nefret
पनीर (Far.)	*panīr*	peynir
फ़र्क़ (Ar.)	*fark*	fark
फ़ायदा (Ar.)	*fāydā*	fayda
फुरसत (Far./Ar.)	*fursat*	fırsat
बराबर (Far.)	*barābar*	beraber
बाज़ार (Far.)	*bāzār*	pazar
मज़बूत (Ar.)	*mazbūt*	mazbut
मदद (Ar.)	*madad*	medet
मशहूर (Ar.)	*maşhūr*	meşhur
मशीन (İng.)	*maşīn*	meşin
मालूम (Ar.)	*mālūm*	malum
मीनार (Far./Ar.)	*mīnār*	minare

मुलायम (Ar.)	*mulāyam*	mülayim
मुश्किल (Ar.)	*muşkil*	müşkül
मुसीबत (Far./Ar.)	*musībat*	musibet
मुहब्बत (Far./Ar.)	*muhabbat*	muhabbet
मे ड सन (İng.)	*medisin*	ilaç
मैदान (Far.)	*maidān*	meydan
मोटर (İng.)	*motar*	motor
याद (Far.)	*yād*	yâd
रंग (Far.)	*rang*	renk
रईस (Ar.)	*rais*	reis
लाल (Far.)	*lāl*	lal
वादा (Ar.)	*vādā*	vaat
शरबत(Far./ Ar.)	*şarbat*	şerbet
शहर (Far.)	*şahar*	şehir
शहीद (Ar.)	*şahid*	şahit
शायद (Far.)	*şāyad*	şayet
शैतान (Ar.)	*şaitān*	şeytan
साफ़ (Ar.)	*sāf*	saf
साबुन (Ar.)	*sābun*	sabun
सगरेट (İng.)	*sigret*	sigara
सूरत (Far./ Ar.)	*sūrat*	suret
स्कूल (İng.)	*skūl*	okul
हफ्ता (Far.)	*haftā*	hafta
हराम (Ar.)	*harām*	haram

हवा (Ar.)	*havā*	hava
हाल (Ar.)	*hāl*	hal
हालत (Far./ Ar.)	*hālat*	halat
हैरान (Ar.)	*hairān*	hayran
होटल[2] (İng.)	*hotal*	otel

हिंदी भाषा में वाक्य रचना एवं व्याकरणिक विशेलषण

वह मेरा दोस्त है.= O, benim dostumdur. = She/He/It is my friend.

ऊपर प्रस्तुत किए उदाहरण देखें तो हमें यह पता चलेगा कि हिंदी तथा तुर्की भाषा में वाक्य "कर्ता + कर्म + क्रिया" इसी क्रम से बनते हैं. "वह" सर्वनाम का लिंग अनजान है. "मेरा" शब्द "मैं + का" से बना हुआ है. "वह" सर्वनाम का लिंग "मेरा" शब्द से ही पता चलेगा क्यूँकि किसी पुरुष की बात हो रही है, यदि वह व्यक्ति स्त्री होती तो "मेरा" की जगह "मेरी" कहते. या तो किताब जैसा कोई निर्जीव स्त्रीलिंग शब्द होता तो "मेरी" ही कहते. यद्यपि किताब जैसे हज़ारों शब्द तुर्की में भी प्रयोग किये जाते हैं तुर्की भाषा में किसी भी शब्द का लिंग नहीं होता. इसलिए हिंदी पढ़ते/पढ़ाते समय या तो तुर्की से हिंदी में अनुवाद करने के दौरान लिंग पर ध्यान देना ज़रूरी है.

वह हर सुबह चाय पी**ती** है.

O, her sabah çay içer.

She drinks tea every morning.

इस वाक्य में हमें क्रिया से ही कर्ता का लिंग पता चलता है. "-ता -ते –ती" से "-ती" लगने के कारण कर्ता स्त्रीलिंग बन जाता है. हर, सुबह, चाय जैसे शब्द तुर्की में भी प्रयोग किये जाते हैं मगर तुर्की भाषा में जैसे कि पहले वर्णन किया गया, कोई लिंग नहीं है. इस मामले में क्रिया का व्याकरणिक विशेलषण करना बहुत महत्वपूर्ण है.

[2] इन शब्द, रुपर्ट स्नेल (२०१०) हिंदी डिक्शनरी से लिया जाता है.

अँग्रेज़ी में पुरुषवाचक लिंग के हिसाब से प्रयोग किये जाते हैं मगर तुर्की भाषा में पुरुषवाचक लिंग से संबंधित नहीं होते. इसलिए अँग्रेज़ी में अनुवाद करने में ज़्यादा आसानी हो सकती है.

वह हर सुबह चाय पी**ता** है.

O, her sabah çay içer.

He drinks tea every morning.

पिछले उदाहरण का पुल्लिंग वाला उदाहरण देखें तो इसमें केवल क्रिया में लिंग का अंतर है. तुर्की में अनुवाद किया जाए तो दोनों वाक्यों में कोई अंतर नहीं होगा क्यूंकि तुर्की भाषा में लिंग नहीं है.

मैं ऑफिस में तुम्हारा इंतजार कर **रहा हूँ.**

Ben seni ofiste bekliyoru**m**.

I am waiting for you in the office.

यद्यपि इस उदाहरण में अरबी एवं अँग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग किया गया है फिर भी कर्ता की लिंग का पता लगाना ज़रूरी है. विशेष रूप से तुर्की में अनुवाद करते समय. इस उदाहरण में क्रिया पढ़कर हमें यह समझ आएगा कि कर्ता एकवचन और पुल्लिंग है क्यूंकि "रहा हूँ" यानी अपूर्ण-वर्तमान काल पुल्लिंग एकवचन कर्ता के तहत प्रयोग किया गया है. बाकी जो भाषा रचना तो तीनों भाषाओं में समान है. (मैं + हूँ, Ben + m, I + am)

मैं ऑफिस में तुम्हारा इंतजार कर **रही** हूँ.

Ben seni ofiste bekliyoru**m**.

I am waiting for you in the office.

पिछले उदाहरण का स्त्रीलिंग वाला उदाहरण पढ़ें तो केवल क्रिया में लिंग का अंतर है. तुर्की में अनुवाद करते समय विशेष रूप से लिंग का वर्णन किया जाना चाहिए.

तुम अस्पताल में **वेट करो.**

Sen hastanede **bekle**.

You **wait** in the hospital.

इस उदाहरण में अरबी तथा फ़ारसी के अलावा अंग्रेजी शब्द का भी प्रयोग देख सकते हैं. वेट के साथ "कर" लगा हुआ है. जैसे हिंदी में अरबी, फ़ारसी शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वैसे ही अँग्रेज़ी शब्दों का भी किया जाता है. इसे इंतज़ार कहें वेट कहें कोई अंतर नहीं है. अंग्रेजी, फ़ारसी, अरबी, तुर्की शब्दों का किस तरह से प्रयोग किया जाए यह तो बोलने वाले के ऊपर है. मगर अलग भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करने से वाक्य की शुद्धता या तो अर्थ की गहराई बदल सकती है, इस पर भी ध्यान देना ज़रूरी है (स्नेल, २०१४). .

इतिहास में हिंदी के विकास के साथ यह कह सकते हैं कि हज़ारों शब्द एवं कुछ भाषा-संबंधी संरचना, सूफिक्सेस आदि हिंदी तथा तुर्की में मिलते जुलते हैं. मगर हिंदी सीखने में लिंग एवं वचन को ढंग से समझना बहुत महत्त्वपूर्ण है. इसलिए हिंदी से तुर्की में अनुवाद करना हो तो विशेष रूप से कर्ता के लिंग का वर्णन करना ज़रूरी है चूँकि तुर्की में पुरुषवाचकों का लिंग हिंदी जितनी आसानी से पता नहीं चलता. जैसे हिंदी में लड़का बोलें तो तुरंत समझ आएगा कि लड़का शब्द पुल्लिंग है, मगर तुर्की में जब तक विशेष रूप से नहीं समझाएँगे या तो व्यक्ति का नाम नहीं लेंगे तब तक समझ नहीं आएगा कि व्यक्ति पुरुष है या स्त्री. तुर्की व्याकरण में कोई लिंग नहीं है. हिंदी की पढ़ाई में छात्रों को यह अच्छे से सिखाना चाहिए कि वे छात्र शब्द सीखते समय अर्थ के साथ लिंग भी सीखें.

संदर्भ

कविता कुमार (२००८) हिंदी "फॉर नॉन-स्पीकिंग पेओप्ले". नई दिल्ली: रूपा. जो.

एसरा कोकडेमिर (२०२०) हिंदी व्याकरण. कोन्या: इगीतिम पब्लिशिंग.

एसरा कोकडेमिर (२०२१) हिंदी के पढ़ने और लिखने. कोन्या: इगीतिम पब्लिशिंग.

कौशिक जयनारायण (१९९०) हिंदी शिक्षण. चंडीगढ़: हरियाणा साहित्य अकादेमी.

गुप्त अशोक (१९९५) सचित्र व्याकरण बोध तथा रचना. दिल्ली: आर्य पब्लिशिंग हाउस.

जयरामन, प (२०१०) अ कोर्स इन हिंदी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

र.स. मक्ग्रेगोर (२०१५) हिंदी-इंग्लिश डिक्शनरी. ऑक्सफ़ोर्ड : ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

रुपर्ट स्नेल (२०१०) हिंदी डिक्शनरी. उक : मजगराव- हिल्ल कम्पनीज.

रुपर्ट स्नेल (२०१४) गेट स्टार्ट हिंदी. उक : मजगराव- हिल्ल कम्पनीज.

सुशील गुप्ता (२०१२) हिंदी पथ. मुंबई: लोकभारती प्रकाशन.